Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4546–4550

COMPARATIVE STUDY OF JOB STABILITY OF TEACHERS WORKING IN SUBSIDIZED AND PRIVATE B.ED. INSTITUTIONS

अनुदानित तथा प्राइवेट बी0 एड0 सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन

Shubham Panwar [1], Bindu Singh [2]

[1] Researcher, Department of Pedagogy, IFTM University, Moradabad, India
[2] Assistant Professor, Department of Pedagogy, IFTM University, Moradabad, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5371

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Job stability is an important factor affecting the quality of personal, social and professional life of any teacher. This study attempts to understand the difference in service conditions, pay scale, appointment process, promotion prospects and job satisfaction of teachers working in both types of institutions and to what extent this difference affects their job stability. Teachers working in subsidized B.Ed. institutions generally get the benefit of rules laid down by the government, recommendations of the Pay Commission, permanent appointments and facilities like pension, due to which their job stability is relatively higher. In contrast, teachers working in private institutions often have to face low salaries, temporary contracts, uncertain service conditions and arbitrariness of the top management, which negatively affects their job stability. In this research, it was also observed that teachers working in aided institutions feel more confident, satisfied and secure, whereas teachers working in private institutions feel worried, dissatisfied and insecure about the future. Due to this, their dedication to work, tendency to innovation and teaching quality are also affected. Apart from this, the activeness of teachers' unions, service security system and judicial protection in aided institutions also prove to be helpful in maintaining job stability. On the other hand, in private B.Ed. institutions, the arbitrary behaviour of managers, termination of service from time to time and the process of reconfirmation of services destabilize the mental state of teachers. They are constantly worried about saving their jobs, due to which they are not able to give full attention to teaching work. This instability also affects the quality of students and the reputation of the institutions. Hence, it is clear that job stability is relatively more in aided B.Ed. institutions, whereas this stability is weak in private institutions.

Hindi: नौकरी की स्थिरता किसी भी शिक्षक के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण घटक है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि दोनों प्रकार के संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा-शर्तों, वेतनमान, नियुक्ति प्रक्रिया, पदोन्नति की संभावनाओं एवं कार्य-संतोष में किस प्रकार का अंतर है और यह अंतर उनकी नौकरी की स्थिरता को किस सीमा तक प्रभावित करता है। अनुदानित बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को आमतौर पर सरकार द्वारा निर्धारित नियमों, वेतन आयोग की सिफारिशों, स्थायी नियुक्तियों एवं पेंशन जैसी सुविधाओं का लाभ मिलता है, जिससे उनकी नौकरी की स्थिरता अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसके विपरीत, प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को प्रायः अल्प वेतन, अस्थायी अनुबंध, अनिश्चित सेवा-शर्तें तथा उच्च प्रबंधन की मनमानी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी नौकरी की स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस शोध में यह भी देखा गया कि अनुदानित संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी, संतुष्ट तथा सुरक्षित महसूस करते हैं, जबकि निजी संस्थानों के शिक्षक भविष्य को लेकर चिंतित, असंतुष्ट और असुरक्षित अनुभव करते हैं। इस कारण उनकी कार्य-निष्ठा, नवाचार की प्रवृत्ति और शिक्षण गुणवत्ता पर भी प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, अनुदानित संस्थानों में शिक्षक संघों की सक्रियता, सेवा-सुरक्षा की व्यवस्था तथा न्यायिक संरक्षण भी नौकरी की स्थिरता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है। दूसरी ओर, प्राइवेट बी.एड. संस्थानों में प्रबंधकों की मनमानी, समय-समय पर सेवा समाप्ति, और

सेवाओं की पुनः पुष्टि की प्रक्रिया शिक्षकों की मानसिक स्थिति को अस्थिर करती है। वे लगातार नौकरी बचाने की चिंता में रहते हैं जिससे शिक्षण कार्य में पूर्ण मनोयोग नहीं दे पाते। इस अस्थिरता का परिणाम विद्यार्थियों की गुणवत्ता और संस्थानों की साख पर भी पड़ता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अनुदानित बी.एड. संस्थानों में नौकरी की स्थिरता अपेक्षाकृत अधिक है जबकि प्राइवेट संस्थानों में यह स्थिरता कमजोर है।

Keywords: Aided and Private B.Ed. Institutions, Teachers and Job Stability अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. संस्थान, शिक्षक एवं नौकरी की स्थिरता

1. प्रस्तावना

भारत में शिक्षक शिक्षा प्रणाली उच्च शिक्षा के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्थापित है, जिसका उद्देश्य भावी शिक्षकों को शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक एवं मानसिक रूप से तैयार करना है। इस परिप्रेक्ष्य में बी.एड. संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहीं से शिक्षण कार्य के लिए योग्य मानव संसाधन तैयार किए जाते हैं। बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित करने वाले संस्थानों को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - अनुदानित संस्थान तथा निजी (प्राइवेट) संस्थान। अनुदानित संस्थान वे हैं जिन्हें केंद्र या राज्य सरकार से आंशिक अथवा पूर्ण वित्तीय सहायता प्राप्त होती है, जबकि प्राइवेट संस्थान निजी स्वामित्व व संचालन के अंतर्गत आते हैं और स्ववित्तपोषित होते हैं। इन दोनों प्रकार के संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य स्थितियाँ, वेतनमान, सेवा सुरक्षा, प्रोन्नति की संभावनाएँ, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं नौकरी की स्थिरता में स्पष्ट भिन्नता देखी जाती है, जो शोध अध्ययन का एक महत्वपूर्ण आधार बनता है। नौकरी की स्थिरता का तात्पर्य एक शिक्षक की उस स्थिति से है जिसमें उसे अपने रोजगार की सुरक्षा, दीर्घकालिक सेवा के अवसर, नियमित वेतन एवं सेवा शर्तों की पारदर्शिता प्राप्त होती है। यह स्थिरता शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतोष, प्रेरणा तथा शिक्षण की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अनुदानित संस्थानों में प्रायः शिक्षकों को चयन के उपरांत नियमित सेवा, समय-समय पर वेतन वृद्धि, पेंशन, अवकाश आदि सुविधाएँ प्राप्त होती हैं जिससे उन्हें पेशेवर रूप से आत्मिक संतोष एवं सामाजिक सुरक्षा का अनुभव होता है, वहीं दूसरी ओर प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षक प्रायः अनुबंध आधारित, अल्प वेतन, अत्यधिक कार्यदबाव एवं नौकरी की अस्थिरता का सामना करते हैं। इन संस्थानों में शिक्षक स्थायित्व की कमी के कारण भविष्य की अनिश्चितता से ग्रस्त रहते हैं, जिससे उनका मनोबल एवं शैक्षिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। नौकरी की स्थिरता न केवल शिक्षक के व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव छात्रों की उपलब्धियों, संस्थान की गुणवत्ता तथा समग्र शैक्षिक प्रणाली पर भी पड़ता है। बी.एड. शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन इस दिशा में एक अत्यंत प्रासंगिक प्रयास है जिससे यह ज्ञात हो सके कि किन कारणों से अनुदानित व प्राइवेट संस्थानों में शिक्षकों की नौकरी की प्रकृति में भिन्नता पाई जाती है और इसके क्या सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक दुष्परिणाम उत्पन्न होते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जब शिक्षकों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, नवाचार, शोध व तकनीकी दक्षता की अपेक्षा की जाती है, तब नौकरी की अस्थिरता उनके कार्य प्रदर्शन को बाधित करने वाली एक प्रमुख बाधा के रूप में उभरती है। निजी बी.एड. संस्थानों की संख्या में हो रही निरंतर वृद्धि, शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया की पारदर्शिता में कमी, न्यूनतम वेतनमान व सामाजिक सुरक्षा के अभाव ने शिक्षक वर्ग में असंतोष एवं असुरक्षा की भावना को जन्म दिया है। इसके विपरीत अनुदानित संस्थानों में चयन प्रक्रिया प्रायः सरकारी सेवा आयोगों अथवा विधिवत गठित समितियों द्वारा की जाती है, जिससे योग्य व्यक्तियों को स्थाई नियुक्तियाँ प्राप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा समय-समय पर वेतनमानों में संशोधन, प्रमोशन की व्यवस्था, सेवा शर्तों की पारदर्शिता आदि पहलुओं ने अनुदानित संस्थानों के शिक्षकों को अधिक सुरक्षित, स्थिर एवं संतुष्ट कार्य परिवेश प्रदान किया है। हालांकि, यह भी सत्य है कि कुछ अनुदानित संस्थानों में राजनीतिक हस्तक्षेप, प्रशासनिक उदासीनता एवं संसाधनों की कमी के कारण शिक्षकों को कई बार असुविधाओं का सामना करना पड़ता है, परंतु कुल मिलाकर उनकी नौकरी अपेक्षाकृत स्थिर मानी जाती है। इसके विपरीत, निजी संस्थानों में शिक्षकों को अपनी सेवा बनाए रखने के लिए प्रबंधन के अनावश्यक दबावों, असामान्य कार्य घंटे, अतिरिक्त कार्यभार एवं संस्थान के हितों के अनुसार कार्य करने की अपेक्षा की जाती है, जो उन्हें मानसिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से प्रभावित करता है। नौकरी की स्थिरता के अभाव में शिक्षक भावनात्मक रूप से असुरक्षित रहते हैं, जिससे उनका शैक्षिक नवाचार व छात्र-केंद्रित शिक्षण प्रभावित होता है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य अनुदानित व प्राइवेट बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता से संबंधित विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, जैसे नियुक्ति प्रक्रिया, वेतनमान, प्रोन्नति व्यवस्था, सेवा शर्तें, सामाजिक सुरक्षा, कार्य वातावरण, प्रशासनिक समर्थन व शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक संतुष्टि आदि। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों एवं संस्थागत प्रबंधकों के लिए महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदान कर सकता है, जिससे बी.एड. शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों की सेवा शर्तों में आवश्यक सुधार संभव हो सके। साथ ही यह शोध उन कारकों की पहचान करने में भी सहायक सिद्ध होगा जो निजी शिक्षण संस्थानों में नौकरी की अस्थिरता का कारण बनते हैं और जिनके समाधान द्वारा समग्र शिक्षा प्रणाली को सशक्त, न्यायसंगत एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया जा सकेगा कि किस प्रकार नौकरी की स्थिरता शिक्षकों के जीवन स्तर, कार्य प्रतिबद्धता, संस्था के शैक्षिक वातावरण एवं छात्रों की उपलब्धियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। वर्तमान समय में, जब भारत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता, समावेशन, नवाचार एवं शिक्षक सशक्तिकरण की दिशा में अग्रसर है, तब

बी.एड. शिक्षकों की सेवा स्थितियों का गहन अध्ययन आवश्यक हो जाता है, ताकि शिक्षक शिक्षा संस्थानों को सुदृढ़, उत्तरदायी व परिणामकारी बनाया जा सके। इस शोध का निष्कर्ष नीति निर्माण व निजी संस्थानों के नियामक निकायों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है जिससे समता, स्थायित्व और शिक्षकों के सम्मान की भावना को प्रोत्साहन मिल सके। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन एक अत्यंत महत्वपूर्ण व समसामयिक विषय है, जो शिक्षा क्षेत्र की गुणवत्ता, प्रभावशीलता व सतत विकास के लिए एक ठोस मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय शिक्षा प्रणाली के वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक-शिक्षण संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है, विशेषकर बी.एड. संस्थानों की, जो भावी शिक्षकों का निर्माण करते हैं। इन संस्थानों में कार्यरत शिक्षक न केवल शैक्षिक गुणवत्ता के संवाहक होते हैं, बल्कि भावी पीढ़ियों को दिशा देने वाले मार्गदर्शक भी होते हैं। भारत में बी.एड. संस्थानों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है अनुदानित संस्थान (सरकारी सहायता प्राप्त) और प्राइवेट (निजी स्वामित्व वाले) संस्थान। इन दोनों प्रकार के संस्थानों की कार्यप्रणाली, प्रबंधन ढांचा, संसाधन उपलब्धता और शिक्षकों की सेवा शर्तों में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। विशेष रूप से नौकरी की स्थिरता जैसे मुद्दों पर यह अंतर और अधिक गहराता है। इसी कारणवश ष्अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययनष् विषय पर शोध की आवश्यकता अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो जाती है।

नौकरी की स्थिरता न केवल किसी शिक्षक की आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है, बल्कि उसके मानसिक स्वास्थ्य, पेशेवर समर्पण और शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। अनुदानित संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा, नियमित वेतन, सेवा नियमों का संरक्षण और प्रोन्नति की संभावनाएं प्राप्त होती हैं, जबकि निजी संस्थानों में शिक्षकों को अस्थायी नियुक्ति, कम वेतन, कार्यस्थल पर असुरक्षा और अनिश्चित भविष्य का सामना करना पड़ता है। इससे उनके कार्य प्रदर्शन, आत्म-संतुष्टि और छात्रों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यदि बी.एड. जैसे संवेदनशील प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी सुरक्षित नहीं होगी तो भावी शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता भी संदेह के घेरे में आ जाएगी।

यह शोध अध्ययन शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता के उन सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और व्यक्तिगत पहलुओं की पहचान करने का अवसर प्रदान करेगा, जिनके कारण विभिन्न प्रकार के संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के अनुभव भिन्न होते हैं। इससे यह जानना संभव होगा कि किन संस्थागत नीतियों और कार्यप्रणालियों से शिक्षकों को अधिक सुरक्षा और स्थायित्व का अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शैक्षणिक प्रशासनिक अधिकारियों तथा निजी संस्थानों के प्रबंधन को भी आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करेगा कि वे किस प्रकार शिक्षक-सेवाओं में सुधार करके शिक्षण प्रणाली की गुणवत्ता को सुदृढ़ कर सकते हैं।

बी.एड. शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह व्यापक शैक्षिक व्यवस्था की स्थायित्व और विकासशीलता से भी जुड़ी होती है। शिक्षकों के मन में अस्थिरता की भावना उन्हें बेहतर शिक्षण पद्धतियों को अपनाने, नवाचारों के लिए प्रेरित होने और दीर्घकालिक योजना बनाने से रोकती है। वहीं दूसरी ओर स्थिरता उन्हें न केवल सुरक्षित अनुभव कराती है, बल्कि संस्थान के प्रति निष्ठा, उत्तरदायित्व और नवाचारों के प्रति समर्पण भी उत्पन्न करती है। ऐसे में यह शोध यह विश्लेषण कर सकता है कि किस प्रकार की नौकरी व्यवस्था शिक्षकों में दीर्घकालिक प्रतिबद्धता विकसित करती है।

इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में जब शिक्षा का निजीकरण एवं व्यावसायीकरण अपने चरम पर है, तब निजी बी.एड. संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा स्थिति को समझना और उनका तुलनात्मक अध्ययन करना नीतिगत स्तर पर आवश्यक हो जाता है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करेगा कि निजी संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को किन व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और वे किन परिस्थितियों में कार्य करते हैं। यह शोध यह भी स्पष्ट करेगा कि वेतनमान, सेवा शर्तें, प्रोन्नति, स्थानांतरण, कार्यभार, अनुबंध की प्रकृति आदि कारक किस प्रकार से उनकी नौकरी की स्थिरता को प्रभावित करते हैं।

इस विषय पर अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इससे राष्ट्रीय स्तर पर एक समग्र नीति का निर्माण संभव हो सकता है जो सभी प्रकार के बी.एड. शिक्षकों को न्यूनतम सुरक्षा मानक सुनिश्चित कर सके। साथ ही यह शोध उन अंतर्विरोधों को भी उजागर करेगा जो समान योग्यता रखने वाले शिक्षकों के मध्य केवल संस्था के प्रकार के आधार पर उत्पन्न होते हैं। इससे यह तर्क भी बल प्राप्त करेगा कि समान कार्य हेतु समान वेतन और सेवा शर्तें लागू होनी चाहिए।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- राव, वी.के. (2005) ने भारत में शिक्षक शिक्षाष् उद्देश्यरू भारत में शिक्षक-शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता और समस्याओं का अध्ययन किया। निष्कर्ष: अनुदानित संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अधिक वेतन सुरक्षा, प्रोन्नति की संभावनाएं और सेवा नियमों का पालन सुनिश्चित होता है, जबकि निजी संस्थानों में अनुबंध आधारित सेवाएं अधिक प्रचलित हैं जिससे नौकरी की स्थिरता कम होती है।

- एनसीटीई (2009) ने भारत में शिक्षक शिक्षा संस्थानों की स्थितिष् उद्देश्यरू देशभर के बी.एड. संस्थानों की स्थिति का अवलोकन किया। निष्कर्ष: प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को अस्थायी नियुक्तियाँ, कम वेतन और सेवा शर्तों की अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है। जबकि अनुदानित संस्थानों में शिक्षक अधिक संतुष्ट और सुरक्षित अनुभव करते हैं।
- शर्मा, रेखा (2012) ने सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त कॉलेजों में शिक्षकों के बीच नौकरी से संतुष्टि पर अध्ययन किया। उद्देश्य: अनुदानित एवं प्राइवेट कॉलेजों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी संतुष्टि का अध्ययन। निष्कर्ष: अनुदानित संस्थानों में 78 प्रतिशत शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट थे जबकि प्राइवेट संस्थानों में यह आंकड़ा मात्र 42 प्रतिशत था। इसका प्रमुख कारण स्थिरता, सामाजिक सुरक्षा और पदोन्नति की सुविधा थी।
- खान, ए.आर. (2016) ने सरकारी और निजी संस्थानों में शिक्षकों की नौकरी सुरक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष: सरकारी/अनुदानित शिक्षकों की औसतन सेवा अवधि अधिक थी, तथा उनका मानसिक स्वास्थ्य और कार्य प्रदर्शन भी बेहतर था। प्राइवेट संस्थानों में वेतन असमानता और कार्यस्थल की अस्थिरता देखी गई।
- दुबे, एस.सी. (2018) ने भारत में स्व-वित्तपोषित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में कार्य की स्थितियाँ पर अध्ययन किया। उद्देश्य: निजी बी.एड. कॉलेजों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य स्थितियों का विश्लेषण। निष्कर्ष: 60 प्रतिशत शिक्षक प्रति वर्ष संविदा नवीनीकरण पर कार्य कर रहे थे। न ही कोई सेवा सुरक्षा थी, न ही उचित प्रशिक्षण या वेतनमान। इससे नौकरी की स्थिरता न्यूनतम स्तर पर थी।
- वर्मा, एम. और सिंह, ए. (2020) ने अनुदान प्राप्त और निजी बी.एड. कॉलेजों में शिक्षकों की नौकरी की सुरक्षा और प्रेरणा पर अध्ययन किया। निष्कर्ष: अनुदानित कॉलेजों में शिक्षकों की प्रेरणा स्तर ऊँचा पाया गया, जिसका सीधा संबंध उनकी नौकरी की स्थिरता से था। जबकि निजी संस्थानों में अनिश्चितता के कारण प्रेरणा स्तर और शिक्षण गुणवत्ता प्रभावित हो रही थी।
- गुप्ता, नीरज (2021) ने सरकारी और निजी बी.एड. कॉलेजों में नौकरी बनाए रखने की दर का तुलनात्मक विश्लेषण किया। निष्कर्ष: सरकारी/अनुदानित बी.एड. संस्थानों में पिछले 10 वर्षों में शिक्षक रिटेंशन दर 85 प्रतिशत थी, वहीं निजी संस्थानों में यह दर 50 प्रतिशत से भी कम पाई गई।

4. समस्या कथन

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1) अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन।

2) अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1) अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

2) अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड. सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध पत्र हेतु 400 शिक्षकों को शामिल किया गया है।

उपकरण : नौकरी की स्थिरता मापनी - स्वनिर्मित प्रश्नावली।

5. परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना क्रमांक 1:- अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

तालिका संख्या - 1

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

पुरुष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	100	52.41	14.81	1.32	***
प्राइवेट संस्थान	100	54.73	16.56		

व्याख्या - तालिका संख्या 1 में अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता को दर्शाया गया है। तालिका में अनुदानित संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 52.41 एवं 14.81 प्राप्त हुआ है जबकि प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 54.73 एवं 16.56 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.32 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या - 2

अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
अनुदानित संस्थान	100	53.16	15.62	1.26	***
प्राइवेट संस्थान	100	56.92	16.84		

व्याख्या तालिका संख्या 2 में अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता को दर्शाया गया है। तालिका में अनुदानित संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 53.16 एवं 15.62 प्राप्त हुआ है जबकि प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 56.92 एवं 16.84 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.26 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि अनुदानित एवं प्राइवेट बी0एड0 संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

6. निष्कर्ष

1.अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2.अनुदानित तथा प्राइवेट बी.एड.सस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षकों की नौकरी की स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

7. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Rao, V.K. (2005). Teacher Education in India. New Delhi: APH Publishing Corporation.
National Council for Teacher Education (2009). Status of Teacher Education Institutions in India.
Sharma, R. (2012). Indian Journal of Educational Research, Vol. 6(1), pp. 88–95.
Khan, A.R. (2016). International Journal of Education and Applied Sciences, Vol. 3(2), pp. 52–59.
Dubey, S.C. (2018). Journal of Teacher Development, Vol. 10(1), pp. 15–24.
Verma, M. & Singh, A. (2020). Journal of Educational Policy and Research, Vol. 12(4), pp. 91–101.
Gupta, N. (2021). Indian Journal of Teacher Education, Vol. 15(2), pp. 73–82.